

बदल रही है हिमालय की फिजा

उत्तराखण्ड से लौटकर प्रवीण प्रभाकर

भारत के हिमालयी इलाकों में हो रहे मौसमी बदलाव को बाकी भारत से अलग देखने की जरूरत है, क्योंकि बीते 400 वर्षों में उत्तराखण्ड से लेकर जम्मू-कश्मीर तक में जबर्दस्त जलवायु परिवर्तन हुआ है। कहीं बुरांश के फूल खिलने का समय बदल चुका है, तो कहीं और कंचाई पर जाकर सेब की खेती करनी पड़ रही है।

हालांकि इन बदलावों को पूछ करने वाले वैज्ञानिक शोधों की कमी है लेकिन रिसर्च वैज्ञानिक बहादुर सिंह कोटलिया जलवायु परिवर्तन की प्रमाणिक जानकारी देते हैं। वह कहते हैं, लघु हिम युग (1400-1850) की तुलना में अब हिमालय के इलाके में ज्यादा सूखा और अधिक गर्मी है। यह मौसम का बदलता मिजाज नहीं तो और क्या है? कोटलिया नैनीताल स्थित कुमांक विश्वविद्यालय के सेंटर ऑफ एडवॉर्स्ड स्टडी इन जियोलॉजी के रिसर्च वैज्ञानिक हैं। वह गुफाओं पर अध्ययन करते हैं, जहां

जलवायु परिवर्तन

- हिमालय क्षेत्र में दक्षिणी-पश्चिमी मानसून का प्रभाव पड़ रहा कमज़ोर
- लघु हिम युग की तुलना में अब हिमालय के इलाके में है ज्यादा सूखा और गर्मी

स्टैलैमाइट चट्टानों की बहुतायत है। उनके ऊपरी सिरे के रंधों से मानसून का पानी नीचे की ओर जाता है। अगर मानसून बेहतर हुआ, तो पानी ज्यादा टपकता है। ज्यादा पानी टपकने से चट्टान की वृद्धि दर भी तेज होगी। दूसरे अर्थों में कहें, तो मानसून का प्रभाव ज्यादा दिखा तो चट्टान की रिंग मोटी होगी। इस तरह के चट्टान का अध्ययन कर उसकी आयु का पता लगाया जा सकता है। साथ ही वह भी पता लगाया जा सकता है कि किस वर्ष कितना मानसून आया था। कोटलिया ने उत्तराखण्ड और जम्मू-कश्मीर, दोनों जगहों की स्टैलैमाइट चट्टानों का अध्ययन किया

शिवलिंग पेश करता है सबूत

हिमालयी क्षेत्रों में स्टैलैमाइट चट्टानें पाई जाती हैं। इन खड़ी बैलनाकार चट्टानों को स्थानीय बोलचाल में शिवलिंग कहते हैं। ये चट्टानें गुफाओं में मिलती हैं। इनका ऊपरी हिस्सा कैलिस्यम कार्बनेट का बना होता है और सतह लाइम स्टोन की होती है। ये चट्टानें क्षेत्र में मानसून के इतिहास की गवाही देती हैं।

है। उन्होंने पाया कि दक्षिण से उत्तर की ओर बढ़ने के साथ इन चट्टानों की वृद्धि दर में कमी देखने को मिलती है और उनकी रिंग पतली होती जाती है। यानी दक्षिण से उत्तर की तरफ जाने के साथ भारतीय मानसून का असर कम पड़ने लगता है। कोटलिया ने यूरेनियम-थोरियम डेटिंग का भी सहारा लिया, जिससे यह पता चला कि जिस साल स्टैलैमाइट चट्टान की वृद्धि ज्यादा हुई, उस साल हिमालयी क्षेत्रों में पेंड-पैंडे भी ज्यादा उगे और बारिश भी अधिक हुई। (सेंटर ऑफ साईंस एंड एन्वायरमेंट की मीडिया फेलोशिप के तहत)